आदर्श दो पाठशाला
(१) ध्यान-अमृत दायक दिमागी शक्ति
का विकास करना और
(२) स्वास्थ्य हितकारी बीजों की शक्ति
का विकास करना।
दो प्रकार की शिक्षा अनिवार्य है।

वे श्रध्दालु माता- पिता कुन्ती और
पाण्डव हैं जो सन्तानों को काम-क्रोध
के त्यागी, सद्गुण-सदाचारी बनाने
में प्रयत्नशील हैं।

ध्यायतो विषयान्- यह
अपराध है अर्थात् पाप है।
(श्री गीता अ.२/६२-६३)

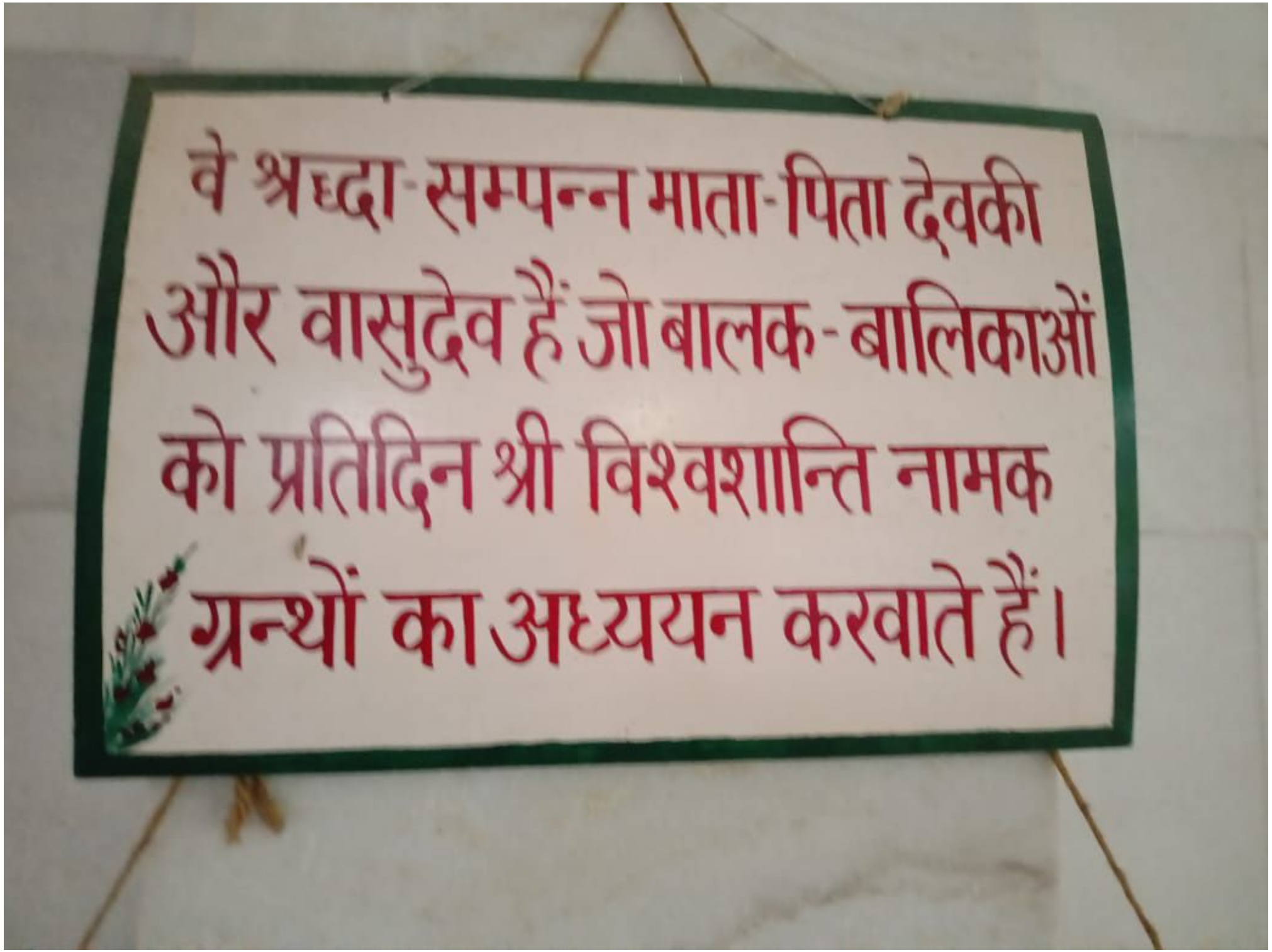
वे श्रद्धा-सम्पन्न माता-पिता देवकी
और वासुदेव हैं जो बालक-बालिकाओं
को प्रतिदिन श्री विश्वशान्ति नामक
ग्रन्थों का अध्ययन करवाते हैं।

भारत के श्रीमान ऋषि-मुनि जन देह और दिमाग को निरोग कैसे रखते थे ?

कर्मयोगः ध्यानयोगः

विटामिनों से युक्त कन्द मूल फल तैयार करते थे और ध्यान-अमृत पान करते-कराते थे ।

❋ रस्याः स्निग्धाः ❋